भाग ५ - ८०

बाहर की ओर होना प्रारंभ होगा। और फिर ध्यान कर अपने चित्त को भीतर की ओर मोड़ना होगा। और यही प्रक्रिया मनुष्य के जन्म मृत्यु तक चलते ही रहती है। और उसी संतुलन की स्थिति बनाए रखना और उसी संतुलन की स्थिति में मृत्यु आना ही ' मोक्ष ' है।

' मोक्ष ' यानी मृत्यु नहीं। मोक्ष एक ऐसी स्थिति है जिससे संपूर्ण जीवन संतुलन हो जाता है। और यह स्थिति बनाने के लिए चाहिए साधना और साधना करने के लिए चाहिए शरीर। यानी जबतक शरीर है , तभी तक मोक्ष की स्थिति प्राप्त की जा सकती है , शरीर छोड़ देने के बाद नहीं। शरीर छोड़ देना तो शरीर की मृत्यु ही होती है , पर शरीर न रहने पर मोक्ष की स्थिति नहीं मिल सकती हैं। जो कहा जाता है , ' मनुष्य मर जाने पर मोक्ष मिलता है " - कहते हैं , वह गलत है।

प्रायः सुबह लड़की को नहलाकर तैयार करके रोज कहीं - न - कहीं धूमने मैं लेकर ही जाता था। उस धूमने के बहाने मेरा बाहर जाना होता था और लड़की का धूमना भी होता था। लेकिन लड़की को पता नहीं क्यों मिट्टी में जाकर खेलना खूब पसंद था। उसे तैयार करके थोड़े देर के लिए भी रखा तो भी वह मिट्टी में खेलने पहुँच जाती थी और फिर से उसे नहलाना पड़ता था। रोज कुछ न कुछ बाहर के काम होते ही थे , वे मैं उसे ले जाकर पूर्ण करता था। वहाँ अधिक मनुष्यों की बस्तियाँ नहीं थीं और न ही फैक्टरियाँ थीं। केवल नदी के उस पार पाईप बनाने की एक सिमेंट की फैक्टरी थी जो सिमेंट के पाईप बनाने की एक सिमेंट की फैक्टरी थी जो सिमेंट के पाईप बनाती थी , बस और कुछ नहीं। इसके कारण वातावरण में प्रदूषण नहीं था। और अधिक बस्तियाँ न होने से वैचारिक

प्रदूषण भी नहीं था। घर नदी के किनारे पर , नर्सरी के पास , पहाड़ के नीचे था तो ध्यान करने के लिए तो बड़ा उपयुक्त स्थान था। और यही सब देखकर हमने वह लिया था।

एक दिन सुबह ही कपड़े के एक व्यापारी के साथ एक जैन व्यापारी कलकत्ते से आया। उस जैन व्यापारी की समस्या थी कि उसकी १६ साल की जवान लड़की अचानक ही घर से गायब हो गई थी और वह कई दिनों से उसकी खोज कर रहा था लेकिन उसे सफलता नहीं मिली थी। वह अनेकों स्थानों पर गया , अनेकों मांत्रिकों के पास गया , अनोकों तांत्रिक के पास गया था। उसे हमारे एक व्यापारी नर मेरे बारे में भी बताया और वह बता रहा था कि लड़की को खोजने में कितना समय और कितना पैसा उसने खर्च किया था। मैंने उसे थोड़ी सांत्वना दी और शांत किया। और उससे पहले वह घटना कहाँ धटित हुई , वह पूछा और तब धटित हुई , वह पूछा। धटना का और कोई कारण था क्या , वह जानना चाहा। उसका कोई प्रेमसंबंध था क्या , वह पूछा तो उसने बताया , ' बड़ी शांत और सरल स्वभाव की लड़की थी। उसे केवल पुस्तकें पढ़ने का शौक था , लायब्रेरी (पुस्तकालय) में जाकर अलग-अलग धर्मों की पुस्तकें वह पढ़ती थी , बड़ी धार्मिक थी। ' वह रोते - रोते अपनी सारी समस्या बता रहा था। मेरा ध्यान उसकी बातों पर नहीं था। मेरा ध्यान उस लड़की पर ही था , वह अपना बताते ही जा रहा था। ऐसी समस्या सामने आने पर मैं प्रथम यह जानने का प्रयास करता हूँ कि वह जीवित भी है या नहीं। अगर जीवित है तो खोजने का प्रयास करता हूँ और जीवित नहीं है यह भी जाना तो उसे यह नहीं बताता हूँ और उसे ध्यान करने के लिए प्रेरित करता हूँ।

मैंने एकांत में रहकर जाना कि वह लड़की जीवित थी। फिर मैंने उस व्यापारी को बताया , ' मैंने ध्यान करके प्रथम यह जाना कि यह लड़की जीवित है क्या ? तो मालूम पड़ा कि यह लड़की जीवित है।' फिर उस व्यापारी ने दूसरा प्रश्न किया , ' वह अभी कहाँ है ? ' तो ध्यान में मैंने चित्त से जाना कि वह लड़की ' कलकत्ता ' में है। अब कहाँ है यह जानना भी जरूरी था। मैंने कहा , ' वज लड़की कलकत्ता में कहाँ है यह बता नहीं सकता क्योंकि वह अब तुम्हें मिलना नहीं चाहती है। ' क्योंकि ध्यान में मैंने जाना था कि वह जैन साध्वी बन गई थी और उसने संसार को त्याग दिया था। पर यह सब मैं उसे बताना नहीं चाहता था। वह अधिक ही जिद करने लगा तो मैंने कहा , ' कलकत्ता का एक नक्शा लेकर अगली बार आना तो मैं इतना ही बता सकूँगा कि वह कलकत्ता के किस क्षेत्र में निवास कर रही है। ' फिर वह बोला , ' उसके कपड़े और चप्पल गंगाधात पर मिले थे और तबसे सब समझ रहे थे कि वह गंगाजी में डूब गई। लेकिन आपने बताया कि वह जीवित है तो हमें एक नई आशा बांधी है। ' मैंने उसे बताया , ' इस प्रकार के केस में (मामले में) मुझे यह प्रथम देखना पड़ता है कि वह व्यक्ति जीवित है या नहीं। अगर मनुष्य जीवित होता है तो उसके अपने स्पंदन होते हैं और प्रत्येक मनुष्य के स्पंदन अलग-अलग होते हैं। भले ही दुनिया में कितने ही लोग हों , प्रत्येक मनुष्य के स्पंदन अलग-अलग होते हैं और किसी के स्पंदन किसी और के स्पंदन जैसे नहीं होते। वह मनुष्य जीवित है तो ही वैसे स्पंदन आते हैं क्योंकि जीवित व्यक्ति में से ही वैसे स्पंदन आते हैं। और उसके ऊपर चित्त रखने से जाना कि स्पंदन आ रहे हैं। मैं चित्त डालूँ तो वह कहाँ है यह भी जान सकता हूँ। लेकिन चित्त को इतना गंदा करने से अच्छा है कि तुम कलकत्ता का नक्शा ला दो और मैं उस

पर चित्त रखकर यह बता देता हूँ कि वह किस भाग में है और उसके बाद तुम स्वयं जाकर ही खोज लेना। लेकिन वह घर वापस आएगी इस आशा से मत जाना क्योंकि वह घर वापस नहीं आनेवाली है।' वह व्यापारी बोला , ' मैं केवल एक बार मिलना चाहता हूँ। '

वह ब्यापारी वापस कलकत्ता गया , वहाँ से आठ दिन के बाद एक बड़ा-सा कलकत्ता का नक्शा लेकर लौट। मैंने स्केल (मापपट्टी) की सहायता से समूचे नक्शे पर पहले अड़ी लाईन खींची और बाद में खड़ी लाईनें खींचीं। अब नक्शे के ऊपर एक जाली-सी बन गई थी। वाद में दूसरे दिन सुबह नक्शे के एक-एक चौकोन पर चित्त डाला तो एक चौकोन में से उस लकड़ी के स्पंदन आ रहे थे। बाद में वह कलकत्ते का स्थान बताया कि किस स्थान से उस लकड़ी के स्पंदन आ रहे थे , उस चौकोन को लाल रंग से रेखांकित किया और उसे वह नक्शा दे दिया और कहा , ' इस स्थान से वह स्पंदन आ रहे हैं। अब इतने भाग में जितने भी मकान और स्थान आते हैं , उन सबकी जाँच करो। इसी भाग में वह लकड़ी मिलेगी। ' वह व्यापारी कलकत्ते चला गया और ओर कुछ दिनों बाद वापस आकर उसने बताया , ' आपने जो भाग बताया उस संपूर्ण भाग को हमने पुलिस की सहायता से चेक किया (जाँचा) तो एक जैन मंदिर में मुझे मेरी लड़की मिली , वह साध्वी बन गई थी। उसे उस रूप में देखकर मैं तो पहचान ही नहीं पाया। मैं उससे मिला तो वह बोली , ' मेरी आँखें खुल गई हैं और अब मैंने जान लिया है कि मेरे जन्म का उद्देश क्या है। इसलिए , मैंने मेरे जीवन के उद्देश को पाने के लिए यह किया। आपको बताकर इसलिए नहीं क्योंकि बताकर करने से आप करने नहीं देते। अब मैं घर आना ही

नहीं चाहती हूँ , छोड़ दिया तो छोड़ ही दिया है। ' वह व्यापारी बता रहा था , ' वह एक संत जैसी शांत लग रही थी , उसके चेहरे पर एक प्रकार का आनंद अनुभव हो रहा था। उसके दर्शन से ही मेरा मन शांत हो गया और मेरे ही मन में सहज विचार आया कि इतना शांत और समाधानी मैं मेरे घर में उसे नहीं रख सका। वह यहाँ खुश है तो क्यों वापस घर ले जाकर उसे दुःखी करुँ ? यह सोचकर ही मैंने अपनी तसल्ली कर ली। और आपकी कृपा से मैं इतना तो जान सका कि वह जीवित है और अच्छे मार्ग पर है। जिस मार्ग पर चलने की हिम्मत कभी मैं नहीं कर पाया , उस मार्ग पर चलने की हिम्मत मेरी छोटी-सी लड़की ने दिखाई है। उस दिन लगा , उसका मार्ग ही सही है , मैं सही मार्ग पर जीवन में न चल सका , कम से कम उसे तो सही मार्ग पर चलने दूँ। अब तो यह व्यापार-व्यवसाय भी लड़के को सौंप रहा हूँ , मुझे अब इससे भी विरक्ति - सी आ रही है। अब लगता है , एक छोटी-सी लड़की इन सब में से मुक्त हो सकती है तो मैं क्यों नहीं ? अब मैं भी इस में से मुक्ति ले रहा हूँ। '

उस मैंने बताया , ' तुम्हारा निर्णय एकदम सही है। ' मोक्ष ' जीवनरूपी पहाड़ का सर्वोच्च शिखर है। ' मोक्ष ' यानी मृत्यु नहीं है। मोक्ष ध्यान की विशेष स्थिति है , वह हमें हमारे जीवन में ही पाना है। ' मोक्ष ' यानी मुक्ति। सभी व्यवहारों से , सभी झमेलों से धीरे-धीरे मनुष्य ने मुक्त होना चाहिए और एकांत में बैठकर अपनी आत्मा के साथ समय गुजरना चाहिए। इसकी शुरुआत ५० साल के बाद की जा सकती है। मुक्त होने की प्रक्रिया बहुत लंबी है लेकिन धीरे-धीरे इसे अपनाना चाहिए। कम बातें करके इसकी सुरुआत की जा सकती है। उसके बाद पूछने पर

है और जो कठीण है , वह ' अपने से नहीं होगा ' कहकर छोड़ देता है। दूसरा , समाज में एक गलतफहमी है कि ध्यान करना यानी सारे संसार को त्यागना और साधुबाबा बनना है। वास्तव में , संसार को पकड़ो ही मत तो त्यागने का प्रश्न ही नहीं उठता है। कीचड़ में कमल होता है लेकिन कमल पर भी कीचड़ नहीं होता है। वैसा संसार में ही रहो लेकिन कमल जैसे मुक्त रहो , अपना अलग अस्तित्व बनाकर रहो। अलग अस्तित्व आपका तभी बनेगा जब आप अपनी आत्मा के साथ रहोगे। यह एक दिन की प्रक्रिया नहीं है , इसका सालों अभ्यास करना होता है। '

वह व्यापारी बाद में कलकत्ता वापस चला गया और बाद में वापस एक माह के बाद आया और कुछ व्यापारियों को साथ लेकर आया और फिर एक सिलसिला ही चला। वह प्रतिमाह आता ही था।

उन व्यापारियों से बातचीत से पता चला कि सर्वश्रेष्ठ रेडीमेड के (तैयार) कपड़े मुंबई के होते हैं , दूसरे क्रमांक पर कलकत्ता के होते हैं और तीसरे क्रमांक पर दिल्ली के होते हैं। इन क्रमांकों को वहाँ की सिलाई , डिजाइन और गुणवत्ता के आधार पर बनाया गया था। वे व्यापारी कोई भी नया डिजाइन बनाते तो एक फ्रॉक वे मेरी लड़की को प्रथम लाकर देते थे। कभी - कभी तो कई डिजाइन लेकर आते थे। मेरी लड़की जो डिजाइन पसंद करती थी , उस डिजाइन क् फ्रॉक वे उसे भेंट देते थे , और कहते थे , ' जो आपकी लड़की पसंद करती है , वही डिजाइन बाजार में खूब चलता है। ' ऐसा बार - बार होता था। इस कारण मेरी लड़की के पास खूब ड्रेस होते थे। घर में सबसे अधिक ड्रेस उसके पास ही होते थे क्योंकि सभी नए - नए डिजाइन

उसके पास आते थे। प्रायः उन जैन व्यापारियों का आना - जाना चलते ही रहता थे लेकिन उस जैन व्यापारी का जीवन एकदम शांत हो गया था। अब उसे अपनी लड़की पर गर्व था कि जो उसने किया वह सही था और उससे इसे भी समाधान मिला था कि उसकी लड़की सही मार्ग पर चल रही थी। इस प्रकार से उसकी भी चिंता दूर हो गई थी।

वहाँ पर्व केवल चाय देना अच्छा नहीं समझा जाता था इसलिए चाय के साथ दो बिस्कुट देने की प्रथा थी। किसी को केवल चाय नहीं देते थे तो हमारे घर में भी वही प्रथा चालू हो गई थी , खाली चाय कोई नहीं पीता था।

घर में सदैव बिल्लियाँ रहती थीं और बिल्ली के बच्चे भी रहते ही थे क्योंकि हमारा घर बिल्लियों का मॅटरनिटी होम (प्रसूतिगृह) था। सभी बिल्लियाँ बच्चे देने को हमारे घर में ही आती थीं। पता नहीं क्या था लेकिन इस कारण हमारे घर में सदैव बिल्ली के बच्चे रहते ही थे और मेरी लड़की उन बिल्ली के बच्चों से बहुत प्यार करती थी , उनसे खेलते रहती थी। एक तो घर को अच्छा कंपाउंड (घेरा) था , इस कारण कोई कुत्ता बाहर से कभी नहीं आ सकता था और यही कारण होगा कि बिल्लियों को वह घर सुरक्षित लगता होगा। दूसरा , हमारे घर के सदस्य भी बिल्लियों को पसंद करते थे , हम लोग उनके विरोधी नहीं थे। इसलिए शायद बिल्लियों को एक उपयुक्त वातावरण हमारे घर में मिलता होगा। पता नहीं क्या था पर खूब बिल्लियाँ रहती ही थीं। कई बार आसपास के घरों में बिल्लियाँ दूध चुराकर पीती थीं तो लोग हमारे यहाँ आकर शिकायत करते थे , ' तुम्हारी बिल्ली हमारे घर का दूध पी गई।' तो हम कहते थे , ' वे हमारी बिल्लियाँ नहीं हैं और न

ही हमने पाली हैं। हाँ , हम उन्हें भागते नहीं हैं , बस इतना ही है। बाकी तुम चाहो तो उन बिल्लियों को पकड़कर हम तुम्हें भी दे सकते हैं , तुम ही ले जाओ। ' तो फिर वे कुछ नहीं बोलते थे। हमारा बिल्लियों का अड्डा ही बन गया था।

एक दिन सबेरे फिर वे कलकत्ता के जैन व्यापारी एकसाथ आए और विभिन्न विषयों पर चर्चा प्रारंभ हो गई। और चर्चा ' नवकार मंत्र ' और अन्य मंत्रों पर भी होने लगी क्योंकि नवकार मंत्र को वे लोग बहुत मानते थे। उनके साथ कुछ हिन्दू व्यापारी भी थे तो पुराने हिन्दू मंत्रों की भी बात चली। और फिर वे सब कहते थे , ' अपने मंत्र इतने अधिक पवित्र हैं तो आपके गुरुदेव ने यह नया मंत्र समर्पण ध्यानसाधन करने के लिए क्यों दिया ? इस मंत्र को तो कोई जानता भी नहीं है। '

मैंने उन्हें उदाहरण देकर समझाते हुए कहा , ' मारुति ८०० ' मारुति की पहली गाड़ी थी , बाद में ' मारुति १००० ' आई यह आपको और मुझे मालूम है क्योंकि हम समाज में रहते हैं और समाज में होनेवाला बदलाव हमें पता चलता है। और पहले मॉडल की खामियों को दूर करके एक नया मॉडल बनाया गया है। यानी नया मॉडल आपके समय के अनुरूप है , आज की आवश्यकता के अनुरूप है। और यह हमें पता है क्योंकि हम मनुष्यसमाज में रहते हैं। अब यह भी समझ लो , हिमालय में भी एक समाज है और वहाँ भी नए-नए प्रयोग हो रहे हैं लेकिन उनके प्रयोग की जानकारी हमें नहीं है और वे क्या सोचते हैं वह हम नहीं जानते। हिमालय का समाज अलग है , वहाँ की स्थिति अलग है। आज हम सांसारिक लोगों के सामने जो प्रश्न हैं वे उनके सामने नहीं हैं। हमारे संसार में कई